



SB-0111

Second Year B. A. Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper - I

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

Time : Hours]

[Total Marks : 70

सूचना :

(9)

नीचे दृशायेव निशानीवाणी विगतो उत्तरवही पर अवश्य कपवी.
Fillup strictly the details of signs on your answer book.

Name of the Examination :
S. Y. B. A.

Name of the Subject :
Hindi - Paper - 1

Subject Code No. : 0 1 1 1 Section No. (1, 2,.....): Nil

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नो के अंक समान है।

१ भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से 'जयद्रथ-वध' की समीक्षा कीजिए। १४

अथवा

१ 'जयद्रथ-वध' के आधार पर अर्जुन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। १४

२ "हिमालय" कविता में राष्ट्रीय चेतना की प्रबल अभिव्यक्ति मिलती है।" १४
- इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

२ "घर में वापसी" कविता में वर्तमान समाज की वास्तविकता की ओर संकेत किया गया है।" - इस कथन की समीक्षा कीजिए। १४

३ 'जयद्रथ-वध' के आधार पर उत्तरा की चारित्रिक विशेषताओं की चर्चा कीजिए। १४

अथवा

३ "बुद्ध और नाचघर" कविता व्यंग्य प्रधान है" - स्पष्ट कीजिए। १४

SB-0111]

1

[Contd...

- ४ टिप्पणीयाँ लिखिए : १४
- (अ) 'जयद्रथ-वध' काव्य के शीर्षक की सार्थकता।
अथवा
(अ) 'जयद्रथ-वध' में स्वर्ग का वर्णन।
(ब) 'मधुशाला' कविता का उद्देश्य।
अथवा
(ब) 'गीत फरोश' कविता में निहित व्यंग्य।
- ५ ससंदर्भ व्याख्या किजिए : १४
- (क) "मैं हूँ वही जिसका हुआ था ग्रन्थि-बन्धन साथ में,
मैं हूँ वही जिसका लिया था हाथ अपने हाथ में,
मैं हूँ वही जिसको किया था विधि-विहित अधर्माग्नि,
भूलो न मुझको नाथ, हूँ मैं अनुचरी चिरसंगिनी॥"
- अथवा
(क) "जो सर्वदा ही शून्य लगती आज हम सबको धरा,
जो नाथ-हीन अनाथ जग में हो गई है उत्तरा,
हूँ हेतु इसका मुख्य मैं ही हा! मुझे धिक्कार है,
मत धर्मराज कहो मुझे, यह क्रूर-जन भू-भार है॥"
- (ख) "मत बांधो भय के मारे
लोगों को लोहे की कड़ियों में
केवल इसलिए कि उन्हें
शांति और प्रेम और उसका प्रतीक
कविता
अच्छी लगती है
लिखने में पढ़ने में सुनाने में।"
- अथवा
(ख) "कैसी विडम्बना है
कैसा झूठ है
दरअस्ल, अपने यहाँ जनतन्त्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।"
- (ग) "थे वीर लाखों पर किसी से गति न उसकी रुक सकी,
सब शत्रुओं की शक्ति उसके सामने सहसा थकी॥"
- अथवा
(ग) "धन के विलास का बोझ दुखी-दुर्बल दरिद्र जब ढोता है,
दुनिया को भूखों मार भूप जब सुखी महल में सोता है।"